धन्यवाद--पुष्पाञ्जलि.

श्रीयुत रा. रा. पं. छोटेलालजी परवार (नरसिंहपुर C. P. निवासी) सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दि. जैन बोर्डिंग हाउस अहमदाबाद ने इस पुस्तक के संशोधन एवं प्रूफ आदि में बहुत सहायता प्रदानकी है। अतः मैं. पं. जी. का आभार मानता हुवा कोटिशः धन्यवाद देता हूं.

कृपाकांक्षी

सिद्धसेन जैन.

श्रीमान शेठ कोटड़िया, सोमचंद उगरचंद.

लाकरोडा (गुजरात)

॥ ॐ ॥

चित्र--परिचय.

प्रिय पाठको !

गुजरातप्रान्त के अहमदावाद जिले (महीकांठा ऐजंसी) में लाकरोड़ा नामका सुन्दर ग्राम है। सावरमती नदीने इस ग्रामकी शोभा और भी बढ़ा दी है। दि० जैन दसा हूमड़ों के घर अच्छी संख्या में हैं। नित्य धार्मिक क्रियायोंके साथ न्यायोपार्जित धन संचय करते हुए स्वकीय जीवन व्यतीत करते हैं। श्री १००८ चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवानका जिनालय भव्य प्रतिमाओं से सुशोभित अति रमणीक बना हुवा है। दि० जैन पुस्तकालय (Library) श्री. स्व. सेठ माणिकचंद पानाचन्द ज़वेरी वम्बई वालोंके नामसे स्थापित है जिसमें शास्त्र, पुस्तक व अन्य धर्मावलम्बियों के ग्रन्थोंका भी अच्छा संग्रह है। कई समाचार पत्र भी आते हैं। औषधालय में सभी प्रकारकी औषधियों द्वारा रोगी प्रतिदिन लाभ उठाते हैं। पाठशाला सं. १९७८ में हमारे प्रकाशक महोदय शे. सोमचंद उगरचन्दजीने स्वनाम से स्थापित करी थी जिसमें अवभी भले प्रकार शिक्षा देनेका काय चालू है। कुरीतियां, जैसी अन्य गुजरात के ग्रामों में जोर पकड़े हुए हैं वैसी नहीं है, प्रायः सभी कुरीतियां पूज्य धर्मरत्न पं. दीपचंदजी वर्णी के उपदेशसे लोगोंने छोड़ दी हैं। शास्त्र सभा, चर्चादिका

अच्छा आनंद रहता है। लोगोंकी परिस्थिति भी ठीक है। ऐसे धन-धान्य पूर्ण स्थानमें शेठ उगरचंदजीके शुभ घरमें श्रावण शु. ६ सं. १९३८ को से० सोमचन्दजीका जन्म हुवा था.

इसमें सन्देह नहीं, कि जैसे दानी व धर्मात्मा आपके पूज्य पिता थे वैसे ही आप भी धार्मिक भावों से भरे हुए हैं। ओराण में आपके पिताजीने सं. १९५५ में प्रतिष्ठा कराई थी, आपने लाकरोड़ा में वैशाख सु० १२ सं. १९५९ में प्रतिष्ठा कराई. ५०१) रु. स्थानीय मंदिर में केशरखाते के लिये दिया है जिससे प्रतिदिन केशर चढ़ती है। आपने गोमटस्वामी, गिरनार, शिखरजी, तारंगा व केशरिया आदिकी यात्रा कर जन्म सफल किया है। गिरनार पर ५०१) रु० दो मंदिरों में प्रतिष्ठा करनेके लिये दियाहै जो शीघ्र होगी। लक्ष्मीसम्पन्न होते हुए भी आपको अभिमान छू तक नहीं गया। आपके दो पुत्र चि० भग्गूभाई व पूनमचंद सरलस्वभावीहैं। आपका अनुकरण अन्य भाइयोंको भी करना चाहिये। हमारी भगवानसे प्रार्थना है कि सकुटुम्ब दीर्घायु होकर निज धर्मको पालन करते रहें।

हितैषीः–

को. मीठालाल वेणीचंद जैन

लाकरौड़ा.

दो शब्द.

" दृष्टान्ते हि स्फुरा मतिः "

(क्षत्रचूड़ामणि)

दयाधर्मप्रेमी, वाचकवृन्द !

इस छोटे से लेखमें दृष्टान्तपूर्वक यही बतानेकी चेष्टाकी है कि " धर्म बिना जीवन पशुतुल्य है "। " धर्मस्य मूलं दया " सच्चा धर्म अहिंसा (दया) है! पशुओंके मांस द्वारा देवताओं को संतुष्ट करनेकी कोशिश करना, शिकार खेलना, मछली (fish) अंडे (Eggs) ही नहीं, किन्तु भेड़-बकरे, गाय और मनुष्य तकके मांसको खाना-जोकि सर्वथा मनुष्यका आहार नहीं है (इसको पाश्चिमात्य विद्वान, डाक्टरोंने भी सिद्ध करके स्वयं लिखदिया है) ऐसी २ मनुष्योंकी आदतें सिद्ध करती हैं कि वे मनुष्प नहीं किन्तु बिना सींग पूंछ के पशु अथवा उनसे भी गिरे हुए हैं। अतः इसको पढ बुरी २ आदतें छोड़ कर धर्मके मार्गपर स्वयं व दूसरों को भी लगानेकी चेष्टा करें

सामान्यतः सभी धर्मों में अहिंसा को धर्म माना है जैसा कि प्रस्तुत पुस्तकमें संक्षेपसे यथास्थान उनके ही प्रमाण देकर बताया भी गया है। किन्तु शास्त्रोंमें उल्लिखित होने पर भी सब लोग उनकी अवहेलना करते हैं यह बड़े दुःखकी बात है। (मांसादि मनुष्यका आहार नहीं और न वह स्वास्थ्यप्रद

एवं शक्ति वर्द्धक ही है। मूल्य में मंहगा, घृणित, तुच्छ और पशुवोंका पिंड है। फिर भी जिह्वा लम्पटी लोग खाकर सुख और धर्मकी कल्पना करते हैं। धिक्कार है ऐसे धर्म और सुख को !!!

हिंसा में कभी धर्म नहीं होसक्ता। जिन मतोंके शास्त्रो में हिंसा से धर्म व सुख प्राप्ति बताई गई है वे शास्त्र नहीं किन्तु जीवोंकी आत्माओंको नरकमें डालने वाले हैं—

किरठल	}	सेवक
(मेरठ)	}	सिद्धसेन जैन गोयलीय.

॥ ओं ॥

नर–पशु–शास्त्रार्थ

मीमांसा.

—•—
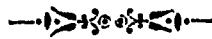
शिखरचन्द्र और मेहरचन्द्र दोनों मित्र एक दिन प्रातः-काल सैर करने के लिये इन्द्रप्रस्थ के विक्टोरियापार्क (Victoria-Park) में जारहे थे। समय बड़ा सुहावना था। अनेकों नर-नारी उसी समय यमुना-नदी में स्नान करने के लिये जा रहे थे। कोई २ धर्मायतनों में जाकर भगवत्प्रार्थना कर अपने कर्मो की निर्जरा करते थे। कितने ही पशु–पक्षी अपने२ सुन्दर शब्दों द्वारा वायु-मण्डलको गुञ्जित कर हर्षित हो रहे थे। भावार्थ यह है कि सब प्राणी अपने करने योग्य प्रातःकालीन कार्यों में लग्न थे। उसी समय एक चार घोडों का तांगा बराबर से निकला। उस तांगे को देखकर मेहरचंद्र कहने लगा–"मित्र! शिखरचंद्र! देखो, पशु अपने कितने कामों में काम आते हैं। सच पूछो तो हमसे पशुही बड़े हैं। हम लोग पशुवों की बराबरी कभी भी नहीं कर सक्ते"।

शिखरचन्द्र–मित्र! यह तुमने क्या बात कही?

मेहरचन्द्र–यही-कि "पशु-पक्षी अपने से हरेक बात में बड़े हैं"।

शिखर०—वाह! मेहर!! खूब रहे; एक दो बात तो ऐसी बताओ जिस से मालूम पड़े कि पशु बड़े हैं या मनुष्य? क्या तुम्हारे कहने मात्र से पशुओंका दर्जा बढ़ जायगा? जिन विचारों को न खाने-पीने के लिये माल-टाल मिलते, न जिनके पास एक गिरह वस्त्र है। देखने में भी जो बुरे मालूम होते हैं, उन्हें तुम कहते हो कि हम से बड़े हैं। धन्य हो महाराज! कहीं बड़ी सोसायटी में जाकर ऐसी विना सींग-पूंछ की बात मत कहदेना!

मेहर०—मित्र! मेरी बात आपको बहुत बुरी मालूम हुई! क्या किसी बात को कहना भी पापहै? तुमने पूछा "पशु किस बातमें बड़े हैं?" सो लीजिए! आपने कहा "विचारोंको खाने पीने के लिये ही नहीं मिलता"। ज़रा, यह तो बताइये—"मनुष्य ही क्या २ अच्छे पदार्थ खाते व पीतेहैं"?

शिखर०—मनुष्य तो; तुमभी जानते हो—"रबडी, मावा, दही, मक्खन, मलाई, पेड़ा आदि अनेकों पदार्थ अच्छे से अच्छा खाते व दूध आदि पीते हैं। जब कि विचारे पशु सूखी घास, खल या बिनौला खाते और गंदला (मैला) पानी पीतेहैं, सो भी मिला तो मिला; नहीं भूखे ही मरते हैं"।

मेहर०—भाई! सुनो—मुझे यह मालूम नहीं था कि आप इतने

कृतघ्नी होंगे ! क्या लेने वाला वड़ा होता है या देने-वाला ? मेरे ध्यान में देनेवाला (दाता) ही सर्वत्र प्रशंसनीय वताया गया है। जव श्रावक मुनि को आहार देता है तो मुनि-महाराज के भी हस्त नीचे और श्रावक के ऊपर रहते हैं। इसी प्रकार दूध, घी आदि जितने पदार्थ आपने अपने खाने व पीने के वताए वे सब पशुवों द्वाराही हमको प्राप्त होते हैं। देखिये, यदि गाय, भैंस व वकरी आदि न हों तो दूध कहांसे मिले ! विना दूध के घी, दही, रवडी मलाई और मक्खनादि कहां से हो सक्ते हैं ? क्या तुम्हारे पास ऐसी कोई मशीन (Machine) है, जिससे ये सर्व पदार्थ तैयार होसक्ते हों। यदि नहीं, तो-तुमने दूसरोंके पदार्थोंको खाकर ऐसा अभिमान क्यों किया कि हम वड़े हैं। वड़े हैं पशु ! जो हमें अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम पदार्थ देते हैं। दूसरे तुम तो जूठ खाते हो, सबसे प्रथम तोता, कोयल आदि पक्षी जव आम आते हैं, वृक्षोंपर ही खालेते हैं पीछे तुमको मिलते हैं। इसी प्रकार दाखादि और भी फल हैं। दूध पहिले गाय या भैंसका वचा पी लेता है तव पीछे हमें प्राप्त होता है......

शिखर०-भाईसा० ! यह वात तो वड़े मार्के की वताई। मैं तो समझता था कि "जो कुछ हैं सो मनुष्यही हैं"। मेरा

भ्रम था। अच्छा; आगे और बताओ कि मनुष्य तो रेशमी, मखमली, ऊनी सूती कपड़े के कोट, कमीज वॅास्कॉट, धोती आदि पहरते हैं परन्तु पशुवों को कुछ भी नहीं मिलता। नंगे रहते हैं। अतःवस्त्रापेक्षा से मनुष्य ही पशुवोंसे बड़े हैं?

मेहर०—नहीं, कभी नहीं; देखो—सबसे अच्छा वस्त्र रेशमी होता है परन्तु मित्रवर! यह तो बताने की कृपाकरें कि उसकी उत्पत्ति कैसे होती है?

शिखर०—एक दिन मैंने अपने पूज्य पिताजी के मुखसे ऐसा कहते हुए सुना था कि एक प्रकारका रेशमका कीड़ा होता है उसके मुख द्वारा पेटमें से ये रेशम के तन्तु निकलते हैं (जिसको आजकल मार कर निकाला जाता है) उन्हीं तन्तुओं को मिलाने से रेशम बनता है

मेहर०—बस, ठीकहै; जो तुम्हारे पिताजीने बात कहीहै वह सोलह आने सचहै। एक कीड़े का उगलन जिसको संसार बहुत बुरी निगाह से देखताहै—मनुष्य पहनकर इतराते हैं। क्या एककीड़े के उगलन को पहनकर मनुष्य पशुवों से जीत सक्ते हैं? दूसरे विचारने की बात है कि ऊनीवस्त्र भेड़ो के बालों द्वारा बनते हैं। जो बिलकुल अशुद्ध होते हैं। तुम तो अपने बालों को कतरवाकर बड़ी दूर इसीलिये न फेंकते हो कि वे अशुद्ध होते हैं। तो फिर पशुवों के बाल कहांतक

शुद्ध हैं सो भाई! तुम्हीं विचार करलो! मंदिर में ऐसे अपवित्र वस्त्रों को पहनकर कभी नहीं जाना चाहिए। दूसरों की दी हुई चीजों को प्राप्त कर बड़ा बनना क्या मनुष्यत्व है? सूती वस्त्र भी कृषि द्वारा उत्पत्ति होने से पशुवों ही की कृपा का फल हैं। दूसरे नग्न क्या साधु नहीं रहते? वेभी बिना वस्त्रादि के पशुवों की संज्ञा में ही ठहरेंगे। कमसे कम किसी बात को सोच समझकर तो कहना चाहिये।

शिखर०—खूब! मेहरचन्द्र!! अच्छा—निद्रा के विषय में विचार करें तो मनुष्यही बड़ प्रतीत होते हैं। क्योंकि अच्छे २ पलंग, गद्दे, तकिये, शाल—दुशालों द्वारा निद्रा लेना और वहभी थोडी, किन्तु पशु जमीनपर या खड़े खड़े ही सर्दी हो या गर्मी बहुत सोते हैं।

मेहर०—हां, यह माना कि मनुष्य अच्छे २ पलंग—मसनदों पर शयन करते हैं परन्तु ऊंची जगह पर या आराम की चीजोंपर शयन करनेसे कोई व्यक्ति बड़ा नहीं होता। यों तो, पशु—पक्षी पहाडों और वृक्षों पर सोते हैं तो क्या वे बड़े होगये? तथा मुनिराज बिलकुल नग्न पृथ्वी पर ही सोतेहैं सो क्या वे बड़े नहीं हैं? दूसरे शयन करने में पशु कम सोते हैं उतने मनुष्य नहीं। यह बात मैं ही नहीं कहता किन्तु बड़े २ कवि व पंडित लोग कहते हैं। देखो, कुत्ता

कितना कम व सचेत सोता है। प्रत्युत, मनुष्य ऐसे अचेत होकर गाढ़ निद्रा लेते हैं कि घरों में चोरी और डाके तक पड़ जाते हैं। कुत्ता जरासी आहट से ही जग जाता है। विद्यार्थियों को जहां अन्य आवश्यक गुणोंका उपदेश दिया जाताहै वहां पर "श्वान निद्रा तथैव च" अर्थात् कुत्ते कैसी अल्प निद्रा लेना बताया है। पशुवों के बिलों अथवा पक्षियोंके घोंसलों में से कभी चोरी होती नहीं सुनी। "काकचेष्टा वको ध्यानम्" आदि से भी कविने पशुवों कीही चेष्टा और ध्यान में मनुष्यों से बड़ा रक्खा है।

शिखर०—शावाश! मित्र पर "भय" पशुवों में अधिकहै। देखो, जब कुत्तेके पीछे लाठी लेकर भगो तो कैसे पूंछ दबाकर भागता है परन्तु मनुष्य कैसे वीर होते हैं। बडे २ युद्धों में तोप, बन्दूक, तलवार, वर्छी गदा और मूसल आदि से लड़ते हैं। अतः मनुष्य निडर होने से पशुवो से बड़े हैं।

मेहर०—मित्रवर! मनुष्यों में तो भय बहुत है। तुमने क्या कभी किसी पशुके हाथ में लाठी बन्दूक वगैरह देखी है? शस्त्रादि तो भय के चिह्न हैं। मनुष्यों में भय अधिक है। अतः उन्हें शस्त्रास्त्रोंकी आवश्यकता होती है। दूसरे जैसे तुमने कुत्तेका उदाहरण डरपोकपणे

में दिया, मैं यह पूछता हूं कि जो अब यहां पर शेर जिसके पास लाठी भी नहीं है, आजावे तो क्या तुम निडर यहीं पर खड़े रहोगे ! तुम लोग घरोंमें ताले बन्द करके बड़े भारीप्रबंधके साथ रहते सहतेहो क्योंकि डरपोंक हो। परंतु पशु जंगल में ही जिनके न मकान है और न कोई दूसरा रक्षाका उपाय है, दिन रात्रि ऐसे ही रहते हैं, फिर मनुष्य बड़े कैसे ?

शिखर०—यहबात भी ठीक है, परन्तु मैथुन—संज्ञा में मनुष्य पशुवों की अपेक्षा बड़े हैं उनका काम—भोग (विषय) पशुवों से कम हैं। इसका स्पष्टीकरण कर समझाइये?

मेहर०—मित्रवर ! तुम ज़रा २सी बातोंके लिए भी—मुझे पूछते हो, यहतो तुम भी-जानतेहो कि बड़े २ शास्त्रों में अधिकार मनुष्योंके लियेही विषय-त्यागका उपदेश किया है अतःस्पष्ट रूपसे सिद्ध है कि आचार्योंकी दृष्टि में भी-मनुष्य ही अधिक विषयाभिलाषी प्रगट हुए थे। आचार्योंकी बातों को भी जानेदो प्रत्यक्षमें देखलो कि कुत्ता-भैंसा आदि जितने पशु—पक्षी हैं वे सभी अपनी २ ऋतु समयमें भोग करते हैं किंतु मनुष्य बारह-मास षड़ ऋतुओं में भोग करते हैं, यह कितने धिक्कार की बात है ! अब आपही बतलावें कि मनुष्य इस विषय में किसप्रकार बड़े हो सक्त हैं?

शिखर०—वेरीगुड माई[१] डीयर ! आपने तो शास्त्रोंका प्रमाण भी देना प्रारम्भ कर दिया। अच्छा ! आगे यह बता कर संशय दूर करें कि सुन्दरता में कौन बड़ा है ? जब मेरी नव-यौवना स्त्रियों पर निगाह पड़ती और पुरुषों के गोरे गाल, सुन्दर ललाट, मनोहर-नासिका और स्त्रियोंकी कटि आदिका विचार करता हूं तो मनुष्य ही सुन्दरता में पशुवों से बाजीले जाते हैं। पशुवों के सींग-पूंछ-खुर और ऊंटकी लम्बी गर्दन तथा गधे के शब्दको सुनकर कौन बुद्धिमान पुरुषोंको ही सुन्दरता न ठहरायगा ? मुझे तो........

मेहर०—बसबस ! इसमें आगे कहनेकी ही आवश्यकता नहीं हैं। यह विषय हमारे और आपके ही विचारनेका नहीं है। इस विषयमें तो आचार्यों ने खूब अन्वेषण (Search) कर शास्त्रों में लिखित प्रमाणों से यह सिद्ध कर दिया है कि पुरुष—स्त्रियों में खूबसुरती हैही नहीं, है भी तो पशुवों से बहुतकम !

शिखर०—यह बात मैं माननेके लिए तैयार नहीं हूं और न आचार्यों ने कहीं ऐसा लिखाही है। यदि-आपके पास कोई इस बातकी पुष्टि में प्रमाण है तो कृपाकर बताइये, मैं हांजी२ कहने वाला नहीं हुं। आप टा-

१. Very good my dear ! बहुत अच्छा—मित्रवर !

इस से न घबरावें आज सन्डे (Sunday) ^, अपने को स्कूल भी जाना नहीं है।

मेहर०—तुम इस बातको तो मानोगे ही, कि जो किसी विषयमें बड़ा होता है उसीकी उपमा उपमेयको दीजाती है सो सब शास्त्र पशुवोंकी उपमाओंसे भरे हुए हैं देखिये:—"पुराणेष्वादिपुराणः" ऐसा कहते हैं कि पुराणों में सबसे बड़ा और प्रमाणीक श्री-जिनसेन स्वामीकृत आदि पुराण है, लीजिए—पहिले उसीका प्रमाणः—

"कैसी है मरुदेवी राणी सदा राजा (नाभि)के मन बसे है, जाकी हंसनी कैसी चाल और कोयल कैसे वचन हैं, जैसो चकवीकी चकवेसे प्रीति होय तैसे राणीकी राजा सों प्रीति होती भई........

पद्मपुराणमें सीता की सुन्दरता देखिये:—

"जीती है मदकी भरी हंसनी की चाल जिसने और सुन्दर हैं भौंह जिसकी अति कोमल हैं पुष्पमाला समान भुजा जिसकी और केहरि समान है कटि जाकी" ....

रावणके विषयमें वृषभ (वैल) समान कंध जिसके पुष्ट विस्तीर्ण वक्षस्थल जाके. दिग्गजकी सूंड समान भुजा जिसकी केहरि समान कटि........

इसी प्रकार अनेको पुराणों में कहीं गज—गामिनी है

तो कहीं हंसगामिनी, कहीं नाकको तोता (सुवा) कैसी व-र्णनकी है तो कहीं लोचनोंको मृग-सदृश वताकर पशुवों में सुन्दरता प्रगटकी है। ऐसी अवस्था में हे मित्र ! तुम्हीं वता-ओ कि मैं मनुष्यों को सुन्दरता में फर्स्टनम्बर (first number) कैसे दूं ?

शिखर०—सच है, देअरइज़नो डाउट[1] अवाउटइट ! मैं विल-कुल समझ गया कि हरेक वातमें पशु ही वड़े और श्रेष्ठ हैं। मनुष्य झूठाही मद करते हैं। भाई २ को भी देख नहीं सक्ते। ओह ! इतनी ईर्ष्या !! सच-मुच इसी द्वेष ने संसार का नाश कर दिया है। जिस देश या जाति में इस कूट की-उत्पत्ति हुई वस उस देश या जातिका स्वाहा समझालो। महाभारत मे देखो ये लोग कैसे लड़े और भारतका सत्यानाश कर दिया इसी लिये वा मैथिलीशरणजी मनुष्यों को शिक्षा देते हुए लिखते हैं:—

सवलोग हिल मिल कर चलो पारस्परिक ईर्ष्या तजो।
भारत न दुर्दिन देखता मचता महाभारत न जो॥
हो स्वप्न तुल्य सदैवको सब शौर्य सहसा सोगया।
हा ! हा !! इसी समराग्नि में सर्वस्व स्वाहा होगया॥
दुर्वृत्त दुर्योधन न जो शठता सहित हठ ठानता।
जो प्रम पूवक पाण्डवोकी योग्यता को मानता॥

---

[1] There is no doubt about it इसमें सन्देह नहीं।

तो डूबता भारत न यों रण-रक्त-पारावार में।
ले डूबता है एक पाणी नावको मझदार में॥

पशुवोंमें अब भी बड़ा ऐक्य हैं। हितोपदेशमें कबूतरोंका कथन आता है कि ये सब मिलकर जालको उड़ा ले गये। चूहोंने कबूतरोंके साथ कैसा सद्व्यवहार कर मित्रता प्रदर्षित की और उनके जालको काट डाला (Union is strength) एकता ही शक्ति है " इस बातको मनुष्य नहीं जानते। " धर्मीसो गउ वच्छ प्रीति सम " कहकर पं दौलतरामजीने मनुष्योंको कैसी शिक्षा दी है?

मनुष्य कितने दुष्ट हैं जो अपने पेटके लिये प्रतिदिन कसाईखानो में लाखो करोड़ो जीवोका विध्वंस करते हैं शिकार खेलते हैं मछली खाते है, बकरे भेड और गायेंको देवकी बलि चढातें हैं। इतनी निर्दयता! ऐसा कठोर व्यवहार!! ऐसी कृतघ्नता!!! जो निजी स्वार्थके लिये शास्त्रोको झूठा बताते हैं कि " हमारे शास्त्रमें अश्वयज्ञ[1] नरमेध यज्ञ करना बताया है॥"

---

१ देवानामग्रतः कृत्वा घोरं प्राणिवधंनराः
(क) ये भक्षयन्ति मासं च ते व्रजन्त्यधमां गतिम॥
(देवीपुराण)

देवी माता और देवताओंके सामने जो मनुष्य जीवोंकी बली चढाकर मारता है- पाड़ा (भैंसा) बकरा मुर्गा और दीन पशुवोंकी हिंसा कर धर्म मानता है वह मनुष्य मरकर नरक जाता है और जो देवी देवताओंपर चढ़े हुए मांसको खाता है वह मरकर रौरव नरकमें पड़ता है।

विचारे पशु इन से कुछ मांगते नहीं, इन का कुछ विगाड़ नहीं करते, जंगलों में रहते हैं, तोभी उनके साथ ऐसा अन्याय !!

(ख) मांसं पुत्रोपमं कृत्वा सर्वमांसं विवर्जयेत् ।
दयादान विशुद्ध्यर्थं ऋषिभिर्वर्जितं पुरा ॥
(देवीपुराण)

अर्थः—जैसे अपने पुत्रका मांस खाना सबको दुखदायक मालुम होता है उसी प्रकार सब जीव मेरे पुत्र समान है उनको मारकर जो मांस खाता है वह वड़ा पापी है। महर्षियोंने मांस खानेका अधर्म बताया है। जो मनुष्य मांस भक्षण करता है वह दया पालन नहीं कर सक्ता। जीवोंकी दया पालन करनेके लिये मांस भक्षण का त्याग कर देना चाहिए।

(ग) घातकाश्चानुमंता च भक्षका क्रयविक्रणः ।
लिप्यन्ते प्राणिघातेन पच्यन्ते तु युधिष्ठिरः ॥

अर्थः—हे युधिष्ठिर ! जीवोंके मारनेवाले, जीवोंकी हिंसामें सम्मति देनेवाले, जीवों का मांस भक्षण करनेवाले, मांसको वेचनेवाले और दूसरोंसे जीव वध करानेवाले ये सब मरकर घोर नरकमें जाकर पड़ते है।

(घ) चित्त रागादिभिर्दुष्टमलीकवचनैर्मुखम् ।
जीवघातादिभिः कायस्तस्य गंगा पराङ्मुखी ॥

अर्थ–जो मनुष्य मनका मैला है, मनमें दूसरोंकी हानि विचारता है और बुरे भाव रखता है, वाणीसे झूठ बोलता है और शरीर से जीवोंका वध

" आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः " ऋषियोके वाक्य का एकदम उल्लंघन ! " दया धर्मका मूल, पाप मूल अभिमान ।

करता है, उससे गंगाजी प्रसन्न नहीं होतीं.

(ङ) जीवोकी दया पालन करना सबसे उत्तम धर्म है।
(स्व० लोकमान्य बालगंगाधर तिलक)

(च) " लेइनाल अल्लाह लहु महावला दिया ।
ओहावेव कि नयना लल्अत्तक वा भिन्नकुम् ॥"
(कुरानशरीफ)

अर्थ-मांस और खुन जो खुदाके नामसे या देविदेवताओंके नामसे जीवोंको मारकर चढाया जाता है, वह खुदाके पास नहीं पहुंचता है मेरी पवित्र मक्काकी यात्रा करनेवाले मनुष्यको मांस खाना शराब पीना सर्वथा ही छोड देना चाहिये। नहीं तो मक्काकी पुण्ययात्रा नर्कमें पहुंचा देगी।

(छ) नीस्त इंइ खुरीने जानवरजु ।
चनीन अस्तदिने झरदुस्तनेकु ॥ "शाहनामा"

अर्थः-मोहम्मद पेगम्बर मांस खानेवालोको धिक्कारता है और जीवोंके मारनेवालों से नफरत करता है । खुदातालाने सबका एकसा हक रखा है, इस लिये किसी जीवको मारना नहीं चाहिये।

(ज) अकबरमु० सम्राट शुक्रवार और दीतवार तथा ग्रहण के दिवस मांस नहीं खाता था. पीछे नरहरि कविने निम्न वधको सुनकर गोकशी भी बंद कर दी थी।

तृणजो दन्ततर धरहिं तिनहिं मारत न सबल कोइ ।
हम नितप्रति तृण चरहि वैन उच्चरहिं दीन होइ ॥

तुलसी दया न छांड़िये जब लग घटमें प्राण." मनुष्योंने इस दोहेको भी-उड़ा दिया है। व्याल रचित अष्टादश पुराणों और मनुस्मृतिका मनुष्योंने कैसा घोर अपमान किया है:—

अष्टादश पुराणेषु व्यालस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम् ॥

आदि सिद्धान्तो को इन्द्रियोंके विषयसे अंध पुरुषों ने कैसे भुला दिया है। "Don't Kill" (मत मारो) बाइबिलके इस Special Principal को परमात्मा (God) ने मुर्गा वग़ैरह खानेको तो बनाए हीहै. ऐसा कहकर अपमानितकर डाला है।

हिन्दुहि मधुर न देहि कटुक तुरकहि न पिवावहिं।
पय विशुद्ध अतिस्रवहि बच्छ महि थम्भन जावहि॥
सुन शाह अकबर! अरज यह करत गउ जोरे करन।
सो कोन चूक मोहि मारियत मुए चमसे बहु चरन॥

(झ) एक मुसलमान बनिए की दूकानपरसे कुछ आटामोल लाया था उसमें एक चींटी निकल आनेपर उस चींटीको वहीं दुकान पर छोडकर आया था. इसे कहते है "रहम" केवल इस डरसे कि अपने घरको छोड़कर यह चींटी मेरे घर में दुःख पायेगी.

(पुस्तकान्तरसे)

I (a) To what purposes the multitude of your sacrifices onto me. Sauid the Lord, "I am full of the burn offerings & the fat of the

इन मनुष्यों को काटने की कैसीर भयंकर मशीनें वनाई हैं ? ५-५ लाल पशुवें के चमड़े द्वारा हवाई जहाज़ वननेकी तरकीवें विज्ञायन-पत्रो में मकाशित होने लगी हैं। निर्दयी लोगों ने अपने आएम के लिये दुनियां के लव प्राणियें को दुःखी करने में कमर कलली है।

---

fed beasts. I belight not in the blood of bullocks, or of the lambs, or of the goats.

(Asia Chapter 1)

अर्थात् ईसा प्रभु ऐसी आज्ञा देता है-वलद, बकरा और भेड़ आदि जीव जंतुओं को या जानवरों को मारकर मांस खाने वालों से मैं प्रसन्न नहीं होताहूं। ऐसे पापी मनुष्यों को मैं अपने पास नहीं बुलाना चाहता हूं।

(B) Behold I have given you every hert bearing seads & trees yieldind fruits They shall be of our meat.

(Genesis Chapter 1, 29.)

अर्थात् ईसा प्रभु आज्ञा देता है कि संसार में जितने फल-फूल और वनस्पति तुम्हारे लिये निर्माण कीहै, इसलिए जो मनुष्य वनस्पति फूलको छोडकर मांस और अपवित्र चीजें खाते है उनके हाथ की वन्दगी (भक्ति) मैं स्वीकार नहीं करता।

(C) Which the flesh was yet between their teeth, ere it was chewed the wrath of the Lord

नहीं देवी माता वगैरा हिंसा कर जीवोंकी बलिदान चाहते हैं, माता महादेव तो ऐसे पाप कर्मको बुरा बतलाते हैं। जो हिंसा करता है, उस पर माता प्रसन्न नहीं होती है रोग दुःख और चितायें जीवोंके मारनेसे नाश नहीं होती हैं किंतु अधिक बढती हैं, जिस स्थान पर हिंसा होती हो वहां पर माता नहीं ठहरता है।

---

was Pindled against the people & the Lord Smote the people with a very great plague.

(see Verse 33 & also Verses 19–8–20)

अर्थात् ईसा प्रभु आज्ञा देता है कि मैंने संसार के लिए अनेक प्रकारकी वनस्पति निर्माण की हैं, अतएव मनुष्योंको सदा वनस्पति का ही आहार करना चाहिए। परन्तु मेरी आज्ञाके विरुद्ध जो मनुष्य मांस खाते हैं, जीव मारते हैं उन लोगोंका पाप मैं प्लेग–मरी और भयंकर रोगों से धोता हूं।

(D) He shall have Judgement without mercy that hath shoresed mercy.

अर्थात् प्राणी मारने वाले क्रूर पापिष्ठ मनुष्यों को भयंकर सजा भोगनी पड़ेगी।

(E) Blessed are the merciful for they shall obtain mercy.

प्राणी पर दया रखने वाले मनुष्यो को धन्य है और परमात्मा ऐसे दयालु मनुष्यपर ही प्रसन्न रहता है।

स्वार्थ और अज्ञानसे मनुष्य अनेक पापकर्मोंको कर बैठता है। यद्यपि किसी भी मतमें जीवोंकी हिंसा करना नहीं कहा है तो भी कुछ स्वार्थी लोगोंने अपने मतलबके लिये देवी देवताओंके नाम हिंसा करनेकी पद्धति प्रचलित कर दी है। विचारे भोले मनुष्य विना विचारे अज्ञानसे देवी देवताओंके नाम घोर हिंसा कर पापकर्म बांधते हैं।

हजारों दीन प्राणी इस प्रकार देवी देवताओंके नाम पर बलि दिये जाते हैं, देवी देवता अपने पुत्रोंके समान जीवोंको मार डालनेकी आज्ञा नहीं देते हैं, देवी देवता जीवोंके रक्षक होते हैं, किंतु भक्षक नहीं हैं।

(F) ऋग्वेद, यजुर्वेदादि में ऐसे सेंकड़ो मन्त्र हैं जो अहिंसाकी पुष्टि करते हैं.
देखो महाभारतमें हिंसाकी कैसी निंदा की है और जीवोंकी दया करनेमें ही धर्म बतलाया है।

(G) सर्वे वेदा न तत्कुर्युः सर्वे यज्ञाश्च भारत।
सर्वे तीर्थाभिषेकाश्च यत्कुर्युः प्राणिनां दया ॥१॥
कृष्ण भगवान कहते हैं कि भारत! जितना महान पुण्य जीवोंकी दया करनेसे होता है उतना न तो वेदों की पूजा करनेसे होता है और न तीर्थ पर हजारों अभिषेक करनेसे होता है। अर्थात् महाभारतमें यह लिखा है कि हजारों यज्ञ करो, हजारों बार वेदोंकी पूजा करो और हजारों बार तीर्थयात्रा करो, परंतु इन सबसे अधिक पुण्य एक जीवकी दया करनेमें है।

मनुष्यों के सब कार्य पशुवेंासे निकलते हैं। खेतीमें, घोड़ा-बैल-ऊंट गाड़ीमें, बोझ लादनेमें, सवारीमें, लड़ाईमें, खाने-पीनेमें पशु ही सर्वत्र काममें आते हैं। पशु न होवे तो मनुष्योंका जीना कठिन अथवा असंभवही है। फिर भी १२ मन बोझ लादनेके बदले २०-२० मन बोझा लादते हैं जिससे गवर्न्मेंट (Government) को भी चालान करना पड़ता है।

(H) अहिंसालक्षणो धर्मोऽधर्मश्च प्राणिनां वधः।
तस्माद्धर्मार्थिभिर्लोके कर्तव्या प्राणिनां दया ॥२॥
अर्थ–जीवोंकी दया ही धर्म है, जीवोंका वध अधर्म है, इसलिये जीव दया सबको पालना चाहिये। महाभारतमें कहा है। जीवोंकी दया ही मुख्य धर्म है।

(I) यदि प्राणवधे धर्मः स्वर्गे च खलु जायते।
संसारमोचकानां तु कुतः स्वर्गोभिधोस्यते ॥३॥
अर्थ–महाभारतमें कहा है कि देवी देवताओंके बहाने हिंसा कर जीवोंकी बलि चढाकर (पाड़ा-बकरा मार कर) धर्म मानना और उससे स्वर्गकी प्राप्ति कहना अज्ञानता है। ऐसे पाप कर्मोंसे तो नरकके दुःख भोगने पड़ते हैं, जीवोंकी दयासे ही स्वर्ग मिलता है।

(J) ध्रुवं प्राणिवधो यज्ञे नास्ति यज्ञस्त्वहिंसकः।
ततोऽहिंसात्मकः कार्यः सदा यज्ञो: युधिष्ठिर ॥४॥
महाभारतमें लिखा है कि यज्ञमें जीवोंकी हिंसा करनेसे यज्ञका फल नष्ट हो जाता है, यज्ञमें हिंसा करना पाप कर्म है इसलिये हे युधिष्ठिर! जिसमें जीवोंकी दया हो ऐसा यज्ञ करो, उससे ही पुण्यकी प्राप्ति होगी।

मेहर०—भाई सा० ! आपने मेरी वात पूरी न सुनते हुए ही वीच में अपनी लम्बी स्पीच (Speech) झाड़ डालीं। ये वातें तो वहुत दूरकी हैं ज़रा-दो चार आवश्कीय वातोंका मिलान (Compitition) कर देखोगेतो मालूम होगा, वास्तव में कौन वड़ा है।

शिखर०—हां, हां, मैं वीचमें ही वोल उठा. क्षमा करिये ! और दोचार वातें अवश्य वताइये मुझे इस विषय में अच्छा आनन्द आ रहा हैं।

(K) यूथं छित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् ।
यागेन गम्यते स्वर्गे नरके केन गम्यते ॥५॥
महाभारतमें लिखा है जिस यज्ञमें जीव मरते हैं (वकरा, पाड़ा आदि जीवोंको वलि दी जाती है) ऐसे यज्ञसे जीव नरक जाते हैं। अर्थात् देवी देवताओंके नाम हिंसा करना, यज्ञमें जीव मारना, धर्मके वहाने जीवोंका नाश करना और जिससे जीवोंको हानि हो ऐसे उपदेश देना ये सव नरकके कारण हैं। यदि ये हिंसक कार्य स्वर्गमें लेजानेवाले हो हों तो फिर नरकमें ले जानेवाले कौनसे कार्य हैं ?

(L) अहिंसा सर्वजीवेषु तत्त्वज्ञैः परिभाषिता ।
इदं हि मूलं धर्मस्य शेषस्तस्यैव विस्तरः ॥६॥
मार्कंडेयपुराणमें लिखा है कि जीवोंकी दया करना ही धर्म है इसलिये देवी देवताओंके नाम कभी भी हिंसा नहीं करनी चाहिये। इसका कारण यह है कि—

मेहर०—पांचों इन्द्रिय के विषयमें भी पशु ही सर्वोत्कृष्ट ठहरते हैं। मनुष्योंकी स्पर्शनेन्द्रिय ऐसी बहुत सुंदर नहीं होती किन्तु पशुवों में चमडेकी सुन्दरता अधिकहै। चीते-शेर-घोड़े-मृग-खरगोश तथा कोयल, हंस, कबूतर आदि पशु-पक्षी का शरीर कितना सुन्दर होता है? बड़े २ चिड़ियाघरों में लोग उनकी सुन्दरता व वीरता प्रदर्शित करने के लिए ही उन्हें पालते हैं। उनके लिये सैंकड़ों नौकर रहने हैं। क्यों कहीं पर मनुष्योंके चिड़ियाघर नहीं बनेहैं हां, जेलखाने तो अवश्य हैं!!!

(M) यथा मम प्रियाः प्राणास्तथाऽन्यस्यापि देहिनः।
इति मत्त्वा न कर्तव्यो प्राणिनां प्राणवधः क्वचित्?
मार्कंडेयपुराणमें लिखा है कि जैसे तुमको अपने प्राण प्यारे हैं उसीप्रकार सब जीवोंको अपने २ प्राण प्यारे हैं इसलिये किसी जीवकी हिंसा नहीं करनी चाहिये। सबकी दया करनी चाहिये।

(N) यो मां सर्वगतं मत्वा न च हिंसेत्कदाचन।
तस्याहं न प्रणस्यामि स च येन प्रणस्यति॥
विष्णुपुराणमे लिखा है कि सब जीवोंमें एक सरीखे (सदृश) प्राण है इसलिये किसो जीवको नहीं मारना चाहिये जो जीव मारता है, मैं उससे प्रसन्न नहीं होता हूं।

वीरता में सिंहादि प्रसिद्ध हैं हीं। चालमें पशुवें की वरावर भागना मनुष्येंकी शक्ति के बाहर है। रसनेन्द्रियमें कोयल कैसेर मीठे-मनोहर शब्द बोलती है। मनको लुभाती है। अच्छेर फलोंका आस्वादन करती है। घ्राणेन्द्रिय में-चींटिया बिना आंखें के ही अदृश एवं बहुत दूरवर्ती पदार्थोंके पास कितनी शीघ्रतासे पहुंच जाती है। चक्षु विषयतो पशुपक्षियोंका बहुत ही वढ़ गया है। मनुष्य सामनेकी वस्तु को देखते है, नहीं दीखती तो चश्मेका प्रयोग करते है।

(O) वरमेकस्य सत्त्वेभ्यो दद्यादभयलक्षणं।
न तु विप्रसहस्रेभ्यो गोसहस्रमलंकृतम्॥
देव पुराणमें लिखा है कि जो मनुष्य एक जीवकी भी दया करता है वह लाखें गायेंके दान करनेसे भी अधिक पुण्य संचय करता है।

(P) पशुनां ये तु हिंसंति ये गृद्धा इव मानवाः।
ते मृता नरकं यांति नृशंसा पापपोषकाः॥
महाभारतमें लिखा है कि जो मनुष्य पशुओको (गाय भैंस बकरा मृगको) मारते हैं। देवी देवताओके नाम चढ़ाते हैं और उनका मांस खाते हैं, वे मनुष्य नरकमें घोर दुःख सहते हैं ओर जो मनुष्य जीवेंकी हिंसाको धर्म कहते हैं वे पापी हैं।

इसीप्रकार देवीपुराण-मनुस्मृति और इतिहासपुराणमें हिंसा करना महान पाप वतलाया है। किसी भी धर्ममें हिंसा करना नहीं लिखा है।

क्या किसी पशुको भी-चस्मा लगाते देखा है ? अधिक दूर देखना हुवा तो दुरवीन आदिका प्रयोग करते है परन्तु तव भी पशुवें की बराबरी नहीं कर पाते है। गिद्ध आकाशमें उड़ता हुवा सौ योजन तक का मांस पड़ा हुवा देख सक्ता है।

योऽधिकाद्योजन शतात्पश्यतीहामिषं खगः....

(हितोपदेशः पृष्ठ १६ पंक्ति २५ वीं)

कर्णेन्द्रिय में–प्रत्यक्ष देखने में आता है कि प्रातःकाल जब कभी में तुम्हें जगाने जाताहूं तो कई वार "शिखरचंद" शिखरू ! ! उठो ! ! ! सवेरा हो गया है, यमुना की सैरको चलो ! आदि कहता हूं तब कहीं तुम्हारी आंखें खुलती है मगर कुत्ते के कान में जरासी आहट पड़ी और वह सचेत हो जाता है। इतना भी नहीं-रात्रि में कोई अनजान आदमी आजावे तो कुत्ता इतने में ही अपनी इन्द्रियें द्वारा जानकर भूसने लगता है।

एकताका पाठ सीखना हो तो पशुवें से सीखो। कारीगरी वैए की घोंसला बनाने में ही देख लीजये। भ्रमरकी वृत्ति सराहनीय है। पुष्पपर वैठे सूंघे परन्तु पुष्प का कुछभी विगाड़ न हो। धन्य है ऐसी वुद्धिमत्ता को ! ऐसी ही अपने पूज्य साधुगण होते है जो पर घर निरान्तराय आहार लेवें दातार का कुछ भी अलाभ न होकर उसके घर पंचाश्चर्य वृष्टि आदि नाना प्रकार की सुख सम्पत्ति प्राप्त

होती है। हंस, गज की चाल, कोयल के मधुर शब्द, तोते मैनाकी राम २ कहानी, हंस की जल दूधको अलग करने की चातुर्यता, बिल्ली आदि को अंधेरे में भी दिखना. कुत्तेकी स्वामि भक्ति, सर्कस में पशुवों के खेल, और उनकी बुद्धिमानी, दूरदर्शिता, कूदना, दौड़ना, दानशीलता आदि देखकर कहना पड़ता है कि पशु हरेक बात में बड़े है।

सांसारिक कार्यों के सिवाय, मेंढकका पुष्पलेकर महावीर स्वामी के समोशरन में जाते हुए हाथी के पैर नीचे आ मरकर स्वर्ग जाने की कथा किसे मालूम नहीं है? (देखो महावीराष्टक श्लोक ४ था)

जटायु पक्षी के धार्मिक-परिणामों का कथन पद्मपुराण के श्रवण-वांचन करने वाले लोग जानते ही होंगे। शास्त्रों में कबूतरों का पंख हिलाकर दानकी प्रशंसा करना क्या नहीं लिखा? तिर्यंच समवशरण बराबर धर्म व्याख्यान सुनने के लिए जाते ही है। कबूतरों के मांस-भक्षण का त्याग कौन नहीं जानता? जगहर कबूतरखाने इसी लिये तो बने है!

परिश्रमपूर्वक न्यायसे मधु मक्खियां, चीटियां, कैसे द्रव्यका संचय कर कष्ट से सन्तानका पालन करती हैं? मनुष्यों को देखो! उन्हीं के छत्तों को तोड़कर उनके बच्चोंका

घातकर के स्वरूप [१]शहद को ग्रहण करके अपने को धन्य मानते हैं। धिक्कार है ऐसी जीभके स्वादको ! गरीबोंको सताना क्या यही मनुष्य जंन्मका ध्येय है ?

तुम लोगोंका दूध क्या कभी पशु पीते हैं ! परन्तु तुम उनके बच्चो को भी न देकर सब अपने आप पी जाते हो। और तो क्या [२]खून पीने तक भी तैयार हो गये !!

---

१ सप्त ग्रामेषुयत्पापमग्निनाभस्मसत्कृतम् ।
तत्पापं जायते जन्तोर्मधुर्बिंदयेक भक्षणात ॥

(नागपटल ग्रंथ)

सातग्रामोंको अग्नि द्वारा जलाने पर जो पाप होता है वह एक बूंद शहद खाने होता है। अर्थात् शहद खाना महापापका कारण है ।

२ गाय कहती :—

हा ! दूध पीकर भी हमारा पुष्ट होते हो नहीं ।
दधि घृत तथा तक्रादि से भी तुष्ट होते हो नहीं ॥
तुम खून पीना चाहते हो तो यथेष्ट वही सही।
नर-योनी हो, तुम धन्य हो, तुम जो करो थोड़ा वही॥
जो जन हमारे मांस से निज देह पुष्टि विचार के।
हैं कर रहे उदरस्थ हमको क्रूरता से मार के ॥
मालूम होता है सदा धारे रहेंगे देह वे।
या साथ ही ले जांयगे उसको बिना सन्देह वे ॥

(भा. भा.)

मनुष्योंकी विष्टा क्या कभी किसी कार्य में काम आती है ? किन्तु पशु-गाय-भैंसका गोबर, घोड़ेकी लीद घर २ में लीपने व बन्दर की टट्टी आदि दवाओं के काम में आती है जो मनुष्य ही खाते है। मनुष्यों का मूत्र कौन पीता है ? परन्तु गायके मूत्रसे अच्छे २ लोग आचमन करते हैं। मनुष्यों के मरनेपर लोग बड़ी शीघ्रतासे उसके देह की दाह क्रिया करते है। उनका शरीर किसीभी काम में नहीं आता किन्तु; पशु जीते जी तो काम में आते ही है पर मरने पर भी उनके चमड़े से जूते, चपरास, डोल, चरस, मशक, पेटी बक्स आदि बनाते हैं। गैडेकी खालसे ढाल बनाई जाती है, हाथी के दांत और सभी हड्डियों से चाकू, कलमदान, बटन, और तरह २ के खिलौने आदि बनते हैं। मृगकी कस्तूरी सब लोग खाते हैं। शेर-बाघ को खालको बड़े २ बाबाजो महाराज आसन बनाकर बिछाते हैं। चमरी गाय के पूंछ की चमर बनाते तथा हरिणादि के मुख मय-सींगों के बड़े २ दरबारों में लटकते हुए नज़र आते हैं। मनुष्योंका कोइ भी हिस्सा किसी के काम में आता हो सो हमने नहीं सुना।

इन मनुष्योंने पशुवों को काटेन की कैसी २ भयंकर मशीनें बनाई है ? ५-५ लाख पशुवों के चमड़े द्वारा हवाई जहाज बनने की तरकीबें विज्ञापन-पत्रों में प्रकाशित होने लगी है। निर्दयी लोगोंने अपने आरामके लिये दुनियां के सब प्राणियों को दुःखी करने में कमर कसली है।

माना कि भीष्म वाणों की शय्या पर सोगयेथे सो क्या हुवा-पशु सोने व चलने के सिवाय मुंह द्वारा खाभी जाते है जैसे ऊट, बकरी मोर के नाच ने तो लोगोंको एक दमही मुग्ध कर डाला है। मकड़ीकी कारीगरी देखकर किस को दंग नहीं रहना पड़ता मुसलमान तो जानसे भी प्यारी समझते हैं। मुर्गेके समयकी कदर किस मनुष्य के हृदय में नहीं आती होगी Time is money (समयही धन है) इस कहावतको मुर्गे ने "कुकडूं कूं २" रूपी कुदरती घड़ी से लोगों को कैसा चकित किया हैं? मित्रवर! सारतो येह हैः- कि पशुओं के बिना मुनियों को भी नहीं सरा. संसारका सम्पूर्ण अन्तरंग व वहिरंग परिग्रह छोड़ा पर मयूर-पिच्छिका तो लेनी ही पडी! वाहरे! पशुवो! धन्य है तुम्हें और तुम्हारे शरीर को एक २ कर के सभी वस्तुएं मनुष्यों के काम में आतीं हैं परन्तु स्वयं कुछ भी उपयोग नहीं करते। सच है "परोपकाराय सतां विभूति."

(मेहरचन्द्रके कहते २ श्री. न्यायाचार्य पं. कुलभूषणजी शास्त्री उधर आ निकले दोनोंकी चर्चा ५ मिनिट तक सुनते रहे वे समझ गये कि आपस में नर पशु सम्बंधी वार्तें हो रही हैं, चुप न रहकर वे बोल उठे)

कुलभूषणजी-प्रिय पुत्रो! आज तुम्हारी किस विषयमें मीमांसा है?

दोनों-गुरुजी! प्रणामोऽस्तु!

पं०— चिरञ्जीवी हो! कहो क्या शास्त्रार्थ ठना है ?

दोनों–कुछ नहीं गुरुजी आज छुट्टीथी घूमने आये थे प्रकरण–वश पशु और मनुष्यों के छोटे बड़े होनेकी बात चल पड़ी थी।

पं. जी०–तो क्या सारांश निकाला ?

दोनों–गुरुजी। हमें दोनोंकी परीक्षा व मिलान करनेपर पशुही सर्व श्रेष्ठ प्रगट हुए हैं।

पं. जी–देखो! पुत्रो! तुम्हारा कहना सत्य है। परन्तु इतना अवश्य याद रक्खो कि दुनियां के विषय आत्मा का कुछ भी हित नहीं कर सक्ते। आत्मा का हित धर्मसे होता है। इसी लिये कहा है:–

आहार निद्रा भय मैथुनं च,
सामान्य मेतत्पशुभिर्नराणाम।
धर्मो हितेषामधि को विशेषो,
धर्मेण हीना पशुभिः समाना॥

अर्थात् खाना–पीना, ओढ़ना-पहरना, निद्रा, भय मैथुन और सुन्दरता आदि ये सांसारिक कार्य हैं इनसे कोई बडा, छोटा नहीं होता, किन्तु निजात्मो को पहचानकर मोक्षमार्ग में लगानेवाला, चतुर्गति गहन-वनके दुःखों से बचाने वाला, आपत्ति में मित्र तुल्य एक धर्म ही मनुष्यों में अधिक है इस लिये वे बड़े हैं। जिन मनुष्यों में परस्पर विवेक रूप धर्म नहीं

उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य शौच संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्यरूप जिनके परिणाम नहीं, सच्चे देव, शास्त्र, गुरुका श्रद्धान नहीं, चाहे जिसके आगे अपना मस्तक झुका देते है, अपने भाईयोमें घृणा करते हैं, धर्म प्रभावना नहीं करतें है संसार के भोगों की जिन्हें आकांक्षा लगी हुई है, " जो देव आराधना, गुरु उपासना, शास्त्र स्वाध्याय. मन इन्द्रिय को वश कर जीवों की रक्षा करना, अनशनादि बारह प्रकार के तपोंको तपना और गृहस्थ का आवश्यकीय कर्तव्यदान-जिसकी-महिमा अपरम्पार है-नहीं करते हैं, " जो अपने को बड़ा व दूसरे की निंदा करते हैं, प्रशम, संवेग अनुकम्पा, आस्तिकता आदि गुणों को हृदय में नहीं धारते, क्रोध मान, माया लोभ में फंसे हुए, अन्यायसे द्रव्य कमा कर, पर जीवों के गले पर छुरी चलाते हैं, हिंसा झूठ, चोरी कुशील, परिग्रह जूवा, मद्य, मांस, वेश्या-परस्त्री गमन शिकारादि व्यसन में रत हैं, बड़, पीपर, पाकर, कठू-मर, गूला अन्य अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हुए रात्रि भोजन करते व अनछना पानी पीते हैं, देखकर चलते नहीं, खान पान शुद्ध नहीं ऐसे पुरुष वे सींग-पूंछ के पशु ही हैं। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

दूसरे-मनुष्य गतिसे सीधा रास्ता मोक्ष जानेका है। यह उत्तम मार्ग पशुवों को अप्राप्य है। अतः धर्मापेक्षया

मनुष्य ही बड़े हैं। इस धर्मका शास्त्रों में बड़ा विस्तार है। इसका फल अपार है। सो फिर कभी तुम मिलोगे तो हम तुम्हें धर्म की बाबत तथा धर्म को बताने वाली विद्या के विषय में बतायेंगे. हमें थोड़ा धूप कर नित्य कर्म करना है।

दोनों०-धन्य हो गुरुजी महाराज! (चरण छूते हैं) गुरुजी का जाना और शिष्यों का प्रणाम करना).

सारंगा-
दीपमालिका.

सेवकः
सिद्धसेन जैन गोयलीयः

मुद्रणस्थान : व सं त मु द्र णा ल य
मुद्रक: चीमनलाल ईश्वरलाल महेता
घीकांटारोड : अ म दा वा द

अवश्य-पढ़िये

जबतक अविद्याका अंधेरा हम मिटावेंगे नहीं,
जबतक समुज्ज्वल ज्ञानका आलोक पावेंगे नहीं,
तबतक भटकना व्यर्थ है सुखसिद्धिके संधानमें,
पाये विना पथ पहुंच सकता कौन इष्ट स्थानमें ?

❦ ❦ ❦

सबसे प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देशमें,
शिक्षा बिना ही पड़ रहे है आज हम सब क्लेशमें।
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,
शिक्षा विना कल्याण कीजे आशा दुराशा मात्र है।

(भा. भा.)

अतः—

शिक्षाके उच्च आदर्शको प्राप्त करनेके लिये ऋ० ब्र० आश्रम मथुरामें अपने बालकों को प्रविष्ट कर तन-मन-धनसे सहायता कीजिए।

"भूषण भवन"
किरठल-(मेरठ)
वासी

निवेदक:-
सिद्धसेन जैन गोयलीय.